HINDUSTANI MUSIC

UNIT-4

राग–भैरव का परिचय

ध–रि वादी–संवादि करि, रि–ध कोमल सुर मान।

प्रात समय नीको लगे, भैरव राग महान्।।

थाट – भैरव

जाति – सम्पूर्ण – सम्पूर्ण

वादी स्वर – 'ध' (कोमल धैवत)

स्वादी स्वर – 'रे' (कोमल ऋषभ)

गायन समय – प्रातः काल (4 से 7 बजे)

समप्राकृतिक राग – रामकली और कालिगड़ा

विशेषता :– इस राग में रे और ध कोमल लगते हैं तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। इस राग में रे और ध को आंदोलित किया जाता है। कोमल रे को गाने के लिए शुद्ध (ग) तथा कोमल ध को गाने के लिए शुद्ध नि का कण लिया जाता है। इस राग में (ग म रे सा) तथा (ग म ध प) की स्वर संगति प्रमुख रूप से गाई/बजाई जाती है।

आरोह :– सा रे ग म, प ध नि सां

अवरोह :– सां नि ध प, ग म रे सा

पकड़ :– ग म ध ध प, ग म रे रे सा

बंदिश

स्थाई – हरि बिना नाही मेरो जग में

कौन सुने मोरी दुख की बतिया

अंतरा – अब मैं आयों शरण तिहारी

लाज रखो मोरी हे गिरधारी

राग भैरव – स्वर लिपि

द्रुत ख्याल

मध्य लय – तीनताल

X 2 0 3

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
	(स्थाई)							ध	ध	ध	प	प	ग	ग	म
ध	ध	प	प	ग	म	रे	सा	ह	रि	बि	ना	s	ना	s	ही
मे	s	रो	s	ज	ग	में	s								
								नि	सा	रे	ग	म	प	ध	नि
सां	नि	ध	प	ग	म	रे	सा	कौ	s	न	सु	ने	s	मो	री
दु	ख	की	s	ब	ति	था	s								
	(अंतरा)							म	म	म	म	प	प	ध	ध
								अ	ब	मैं	s	आ	s	यो	s
सां	सां	सां	सां	नि	रें	सां	सां								
श	र	ण	ति	हा	s	री	s								
								नि	नि	नि	सां	ध	ध	प	प
								ला	s	ज	र	खो	s	मो	री
ग	ग	ग	म	रे	रे	सा	सा								
हे	s	गि	र	धा	s	री	s								

राग काफी का परिचय

थाट – काफी

जाति – सम्पूर्ण – सम्पूर्ण

वादी स्वर – 'प' (पंचम)

स्ंवादी स्वर – 'सा' (षड़ज)

गायन समय – मध्य रात्रि (10 से 1 बजे)

समप्राकृतिक राग – भीमपलासी

विशेषता :– इस राग में ग, नि स्वर कोमल प्रयोग किए जाते हैं, अन्य सभी स्वर शुद्ध प्रयोग किए जाते है।

आरोह :– सा रे ग म, प ध नि सां

अवरोह :– सां नि ध प, ग म रे सा

पकड़ :– सा सा, रे रे, ग ग, म म, प

बंदिश

स्थाई – आज खेलो श्याम संग होरी रे

पिचकारी रंग भरी केसर की

अंतरा – कुंवर कन्हैया, संग सखी राधा

धूम मचावत गौरी रे, आज खेलो .....

राग काफी – स्वर लिपि

द्रुत ख्याल

मध्य लय – तीनताल

X 2 0 3

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
(स्थाई)						रे	म	पध	नि	धप	मग	रे	रे	म	म
						आ	ज	खेऽ	ऽऽ	लो	शा	ऽ	म	सं	ग
प	प	प	ध	म	प										
हो	ऽ	री	ऽ	रे	ऽ										
						रे	म	ध	ध	ध	ध	ध	नि	ध	नि
						पि	च	का	ऽ	री	ऽ	रं	ग	भ	री
प	नि	निरें	सांनि	ध	प										
के	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	की	ऽ										
(अंतरा)						–	–	प	ग	म	प	नि	नि	सां	सां
						ऽ	ऽ	कुँ	व	र	क	न्है	ऽ	या	ऽ
रें	गं	रें	सां	रें	नि	सां	सां								
सं	ग	स	खी	रा	ऽ	धा	ऽ								
								सां	सां	सां	रें	नि	नि	ध	प
								धू	ऽ	म	म	चा	ऽ	व	त
रे	म	पध	नि	ध	प										
गो	ऽ	रीऽ	ऽ	रे	ऽ										

राग – अल्हैया बिलावल का परिचय

थाट – बिलावल

जाति – षाड़व–सम्पूर्ण

वादी स्वर – 'ध' (धैवत)

स्वादी स्वर – 'ग' (गंन्धार)

गायन समय – प्रातः काल

समप्राकृतिक राग – बिलावल

विशेषता :– इस राग के आरोह में मध्यम (म) वर्जित होता है और अवरोह में दोनो (निषाद) का प्रयोग होता है। सां नि ध नि ध प की स्वर संगति में दोनो का प्रयोग किया जाता है।

आरोह :– सा रे ग प ध नि सां

अवरोह :– सां नि ध प, ध नि ध प, म ग रे सा

पकड़ :– ग रे, ग प ध नि सां

बंदिश

स्थाई – जाग उठे सब जन तुम जागो

गौवन के चरवाल चरैया

अंतरा – ग्वाल बाल सब गौआं चरावत

तुमरे कारण सब आवत धावत

संदा रंग मन तुमसो लागो

राग अल्हैया बिलावल – स्वर लिपि

द्रुत ख्याल

मध्य लय – तीनताल

X 2 0 3

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
	(स्थाई)							सां	सां	ध	प	म	ग	म	रे
								जा	s	ग	उ	ठे	s	स	ब
ग	म	प	ग	म	ग	रे	सा								
ज	न	तु	म	जा	s	गो	s								
								सा	सा	ग	रे	ग	प	ध	नि
								गौ	s	व	न	के	s	च	र
सां	सां	सां	सां	निरें	सांन्रि	धप	मग								
वा	s	ल	च	रैs	ss	ss	ss								
	(अंतरा)							प	प	ध	नि	सां	सां	सां	सां
								ग्वा	s	ल	बा	s	ल	स	ब
सां	गंरें	गं	मं	गं	रें	सां	सां								
गौ	s	वा	च	रा	s	व	त								
								प	प	ध	नि	सां	सां	सां	सां
								तु	म	रे	का	र	ण	स	ब
सां	गंरें	गं	मं	गं	रें	सां	सां								
आ	s	व	त	धा	s	व	त								
								ग	ग	ग	रे	ग	प	निध	नि
								स	दा	s	रं	s	ग	म	न
सांन्रि	रें	सां	सां	निरें	सांन्रि	धप	मग								
तु	म	सो	s	लाs	ss	गोs	ss								

दीपचन्दी ताल का परिचय

मात्राएं – 14

विभाग – 4 (3–4–3–4) मात्राओं के

ताली – 1, 4, 11 वीं मात्रा पर

खाली – 8 वीं मात्रा पर

विवरण :– यह ताल कुल चौदह मात्राओं की ताल है, जिसमें चार विभाग है, पहला और तीसरा विभाग तीन–2 मात्राओं तथा दूसरा और चौथा विभाग चार–2 मात्राओं का है, इस ताल मे पहली, चौथी और ग्याहरवीं मात्रा पर ताली आती है तथा आठवीं मात्रा खाली होती है। इस ताल का प्रयोग अधिकतर सुगम संगीत जैसे फिल्मी या भक्ति संगीत में किया जाता है और कई प्रान्तों के लोक गीतों में भी इसका प्रयोग होता है।

मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
बोल (एकगुण)	धा	धिं	s	धा	धा	तिं	s	ता	तिं	s	धा	धा	धिं	s
दुगुन	धाधिं	sधा	धातिं	sता	तिंs	धाधा	धिंs	धाधिं	sधा	धातिं	sता	तिंs	धाधा	धिंs
चिह्न	X			2				0			3			

एकताल का परिचय

मात्राएं – 12

विभाग – 6 (2–2) मात्राओं के

ताली – 1, 5, 9 और 11वीं मात्रा पर

खाली – 3, 7 वीं मात्रा पर

विवरण :– यह ताल कुल बारह मात्राओं की ताल है, इस ताल में 2–2 मात्राओं के छ विभाग होते हैं, इस ताल का प्रयोग अधिकतर विलम्बित ख्याल के गायन में किया जाता हैं, परन्तु द्रुत ख्याल में भी इस ताल का प्रयोग किया जाता है।

मात्राएं	1 2	3 4	5 6	7 8	9 10	11 12
बोल (एकगुण)	धिं धिं	धागे तिरकिट	तू ना	क ता	धागे तिरकिट	धि ना
दुगुन	धिंधिं धागे तिरकिट	तूना कता	धागे तिरकिट धिना	धिंधिं धागे तिरकिट	तूना कता	धागे तिरकिट धिना
चिह्न	X	0	2	0	3	4

तिलवाड़ा ताल का परिचय

मात्राएं – 16

विभाग – 4 (4–4) मात्राओं के

ताली – 1, 5, 13वीं मात्रा पर

खाली – 9वीं मात्रा पर

विवरण :– तिलवाड़ा ताल मूलतः तीनताल का विलम्बित रूप है। इस ताल में कुल 16 मात्राएं होती है। चार–चार मात्राओं के चार विभाग होते है। इस ताल में 1, 5 और 13 वीं मात्रा पर ताली आती है और 9 वीं मात्रा खाली होती है।

मात्राएं	1 2 3 4	5 6 7 8	9 10 11 12	13 14 15 16
बोल (एकगुण)	धा तिरकिट धिं धिं	धा धा तिं तिं	ता तिरकिट धिं धिं	धा धा धिं धिं
दुगुन	धातिरकिट धिंधिं धाधा तिंतिं	तातिरकिट धिंधिं धाधा धिंधिं	धातिरकिट धिंधिं धाधा तिंतिं	तातिरकिट धिंधिं धाधा धिंधिं
चिह्न	X	2	0	3

झपताल का परिचय

मात्राएं – 10

विभाग – 4 (2–3–2–3) मात्राओं के

ताली – 1, 3, 8 वीं मात्रा पर

खाली – 6 वीं मात्रा पर

विवरण :– झपताल एक प्राचीन ताल है। इस ताल में कुल 10 मात्राएं होती है, जिसमें चार विभाग है, पहला और तीसरा विभाग दो–2 मात्राओं तथा दूसरा और चौथा विभाग तीन–2 मात्राओं का है, यह एक बंद बोलो की ताल है। इस ताल का प्रयोग सुगम संगीत तथा शास्त्रीय संगीत में किया जाता है।

मात्राएं	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
बोल (एकगुण)	धीं	ना	धीं	धीं	ना	तीं	ना	धीं	धीं	ना
दुगुन	धींना	धींधीं	नातीं	नाधीं	धींना	धींना	धींधीं	नातीं	नाधीं	धींना
चिह्न	X		2			0		3		